Bhayaanak oont (Hindi)

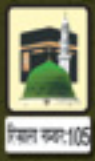

भयानक ऊंट

www.dawateislami.net

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

www.dawateislami.net

(भयानक ऊंट)

येह रिसाला (**भयानक ऊंट**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : tarajimhind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

भयानक ऊंट[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (32 सफ़ह़ात) आख़िर तक पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब व मा'लूमात का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान, **महबूबे रह़मान** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : जिसे कोई मुश्किल पेश आए उसे मुझ पर कसरत से **दुरूद** पढ़ना चाहिये क्यूं कि मुझ पर **दुरूद** पढ़ना मुसीबतों और बलाओं को टालने वाला है।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ٤١٤، بستانُ الْواعظين لِلْجَوزى ص ٢٧٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿1﴾ भयानक ऊंट

कुफ़्फ़ारे कुरैश एक दिन का'बए मुशर्रफ़ा में जम्अ़ थे, नबिय्ये अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे आदम व बनी आदम, **रसूले मुह़तशम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी क़रीब ही नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे,

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया था। तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

अबू जह्ल एक भारी पथ्थर उठा कर दुखिया दिलों के चैन, रह़मते कौनैन, रसूले स-क़लैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक को مَعَاذَاللّٰه सज्दे की ह़ालत में कुचलने के नापाक इरादे से आगे बढ़ा और जूं ही नज़्दीक पहुंचा तो एक दम बोखला कर पीछे की त़रफ़ भागा, कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने ह़ैरत से पूछा : **अबुल ह़कम** ! तुझे क्या हुवा ? बोला : मैं जूं ही क़रीब पहुंचा मेरे तो औसान ही ख़त़ा हो गए, मैं ने देखा कि एक दह्शत नाक सर और ख़ौफ़नाक गरदन वाला **भयानक ऊंट** मुंह खोले दांत किच-किचाता हुवा मुझे हड़प करने के लिये आगे बढ़ रहा है ! ऐसा **भयानक ऊंट** मैं ने आज तक नहीं देखा। **सरकारे** दो[2] आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे आदम व बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) थे, अगर अबू जह्ल और नज़्दीक आता तो उसे पकड़ लेते।

(اَلسِّيْرَةُ النَّبَوِيَّة لابن هشّام ص١١٧)

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की ह़-र-कत पे ख़न्दा ज़न[1] (1 : या'नी हंसने वाला)
फूंकों से येह चराग़ बुझाया न जाएगा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वाह रे ! शाने बे नियाज़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शाने बे नियाज़ी भी ख़ूब है ! कभी अपने मह़बूब मुबल्लिग़ को दुश्मनों के ज़रीए़ मसाइबो आलाम में मुब्तला कर के इन के ख़ूब ख़ूब द-रजात बुलन्द फ़रमाता है

तो कभी मुबल्लिगे़ आ'ज़म, रह़मते दो[2] आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मन को वार करने से क़ब्ल ही ख़ौफ़ज़दा कर के येह बावर करा देता है कि कहीं हमारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अकेला मत समझ बैठना !

आक़ाए मज़्लूम को सताने का सबब

हमारे आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुफ़्फ़ार बद अत्वार के ज़ुल्मो सितम का सबब सिर्फ़ येही था कि अब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم खुल कर लोगों को **नेकी की दा'वत** पेश करने लगे थे, जब कि इब्तिदाअन **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन[3] साल तक **ख़ुफ़्यतन** (या'नी छुप कर) इस्लाम की दा'वत दी, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से अ़लल ए'लान तब्लीग़ का हुक्म हुवा । (ایضاً ص۱۰۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿2﴾ कोहे सफ़ा से नेकी की दा'वत

पारह 19 **सू–रतुश्शु–अ़राअ** आयत नम्बर 214 में इर्शादे रब्बानी है :

وَاَنْذِرْ عَشِیْرَتَكَ الْاَقْرَبِیْنَ ﴿۲۱۴﴾ (پ۱۹،الشعراء،۲۱۴)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ ।

इस हुक्मे ख़ुदा वन्दी पर हमारे आक़ाए क़–रशी, मौलाए हाशिमी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **कोहे सफ़ा** पर जल्वा फ़िगन हो कर क़बीलए क़ुरैश को पुकारा । जब लोग जम्अ़ हो गए तो इर्शाद फ़रमाया : बताओ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

अगर मैं तुम से कहूं कि वादिये मक्का से एक लश्कर हम्ला आवर होना चाहता है तो क्या तुम यक़ीन कर लोगे ? सब ब-यक ज़बान बोल उठे : क्यूं नहीं ! हम ने तो हमेशा आप (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم) को सच बोलते ही देखा है । मुबल्लिग़े आ'ज़म, रह़मते दो[2] आ़लम, **नूर मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **नबिय्ये मुह़्तशम, शाफ़ेए उमम** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तो सुन लो ! अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाओगे तो तुम पर सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल होगा ।" येह सुन कर अबू लहब बक्वास करने लग गया और लोग **मुन्तशिर** हो गए । **(بُخاری ج ٣ ص ٢٩٤ حدیث ٤٧٧٠، ٤٧٧١ مُلَخَّصاً)**

मगर उस रह़मते आ़लम का घर तौह़ीद का घर था
न आ सकती थी मायूसी कि येह उम्मीद का घर था

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾3﴿ दरवाज़े पर ख़ून

इस्लाम की **अ़लल ए'लान** तब्लीग़ शुरूअ़ होते ही ज़ुल्मो सितम की जां सोज़ आंधियां चल पड़ीं । आह ! नबियों के सरवर, दो[2] जहां के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم के जिस्मे मुनव्वर पर कुफ़्फ़ारे बद गोहर कभी **कूड़ा करकट** उछालते तो कभी दरवाज़ए रह़मत पर **जानवरों का ख़ून** डालते, कभी रास्तों में **कांटे** वग़ैरा बिछाते तो कभी ब-दने अन्वर पर **पथ्थर** बरसाते । एक बार तो उन में से एक बे रह़म ने सज्दे की ह़ालत में गरदन शरीफ़ को निहायत शिद्दत से दबा दिया, क़रीब था कि मुबारक आंखें बाहर तशरीफ़ ले आतीं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

कभी ऐसा भी हुवा कि सज्दे की ह़ालत में पुश्ते अत़्हर (या'नी मुबारक पीठ) पर **बच्चादान** (या'नी वोह खाल जिस में ऊंटनी का बच्चा लिपटा हुवा होता है) रख दिया । इलावा अज़ीं कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़-ज़मत निशान में गुस्ताख़ाना जुम्ले बकते, **फ़ब्तियां** कसते । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जादूगर और काहिन भी कहते ।

(اَلْمَواھِبُ اللَّدُنِّيَّة ج١ص١١٨،١١٩وغیرہ مُلَخَّصاً)

पयम्बर दा'वते इस्लाम देने को निकलता था — नवीदे राह़तो आराम देने को निकलता था
निकलते थे कुरैश इस राह में कांटे बिछाने को — वुजूदे पाक पर सो सो त़रह़ के ज़ुल्म ढाने को
ख़ुदा की बात सुन कर मज़्हके[1] में टाल देते थे — नबी के जिस्मे अत़्हर पर नजासत डाल देते थे
तमस्ख़ुर[2] करता था कोई, कोई पथ्थर उठाता था — कोई तौह़ीद पर हंसता था कोई मुंह चिड़ाता था
कुरैशी मर्द उठ कर राह में आवाज़े कसते थे — येह नापाकी के छर्रे चार जानिब से बरसते थे
कलामे ह़क़ को सुन कर कोई कहता था येह शाइर है — कोई कहता था काहिन[3] है कोई कहता था साह़िर[4] है
मगर वोह मम्बए ह़िल्मो ह़या ख़ामोश रहता था
दुआ़ए ख़ैर करता था जफ़ा व ज़ुल्म सहता था

राहे ख़ुदा में मुसीबत झेलना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्लाम की ख़ात़िर कैसी कैसी तकालीफ़ उठाईं ! येह सब कुछ खुल कर नेकी की दा'वत

1 : या'नी हंसी मज़ाक़ । 2 : या'नी मस्ख़री 3 : जिन्नात से पूछ कर बातें बताने वाला 4 : जादूगर ।

शुरूअ़ करने के बा'द हुवा । लिहाज़ा जब भी किसी को **नेकी की दा'वत** देने और इस के सबब कोई तक्लीफ़ उठानी पड़ जाए तो **सुल्ताने ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की राहे तब्लीग़े इस्लाम में पेश आने वाली तकालीफ़ व आलाम को याद कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कीजिये कि उस ने **दीन की ख़ातिर सख़्तियां झेलने वाली सुन्नत** अदा करने की सआ़दत बख़्शी । इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ान नाकाम व ना मुराद होगा और **सब्र** करना आसान हो जाएगा । यक़ीनन राहे ख़ुदा में तक्लीफ़ें उठाना भी **सुन्नत** और इन पर सब्र करना भी **सुन्नत** और बा वुजूद सख़्त तरीन मुश्किलात के **नेकी की दा'वत** का सिल्सिला जारी रखना भी **सुन्नत** है ।

www.dawateislami.net

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ शि'बे अबी त़ालिब

ए'लाने नुबुव्वत के सातवें[7] साल जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने देखा कि इन के बे पनाह ज़ुल्मो सितम के बा वुजूद मुसल्मानों की ता'दाद बढ़ती चली जा रही है और **ह़म्ज़ा व उ़मर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا जैसे ह़ज़रात भी ईमान ला चुके हैं । शाहे ह़ब्शा **नज्जाशी** ने भी मुसल्मानों को पनाह दे दी है तो **''ख़साइसे कुब्रा''** की रिवायत के मुत़ाबिक़ उन्हों ने बिल इत्तिफ़ाक़ येह फ़ैसला किया कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) **अ़लल ए'लान** शहीद कर दिया जाए । जब आप

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब को पता चला तो उन्हों ने भी बनी हाशिम व बनी मुत्त़लिब को जम्अ़ कर के कहा कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को तह़फ़्फ़ुज़ की ख़ात़िर अपने शि'ब (या'नी दर्रे, घाटी) में ले चलो। चुनान्चे ऐसा ही किया गया। **(خصائصِ کُبریٰ ج۱ص۲٤۹)** येह दर्रा **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में वाके़अ़ है जो बनी हाशिम का मौरूसी था। और **"शि'बे अबी त़ालिब"** कहलाता था। (दो[2] पहाड़ों के दरमियानी रास्ते या वहां के ख़ुश्क क़ित़्ए़ या'नी ज़मीन को **शि'ब** कहते हैं)

समाजी क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ (या'नी सोश्यल बायकाट)

जब कुफ़्फ़ारे कुरैश को पता चला कि बनी हाशिम व बनी मुत्त़लिब ने (सिवाए अबू लहब के) बिला इम्तियाज़े मज़्हब, सुल्त़ाने अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने ज़िम्मे ले लिया है, तो उन्हों ने **मुह़स्सब** में जो कि **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا और **मिना** शरीफ़ के दरमियान वाके़अ़ है, आपस में अ़ह्द किया कि "जब तक "बनू हाशिम" **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को इन के ह़वाले नहीं करेंगे कोई शख़्स इन से किसी क़िस्म का तअ़ल्लुक़ नहीं रखेगा। न इन के पास कोई चीज़ फ़रोख़्त की जाएगी न इन से रिश्ता नात़ा किया जाएगा और न ही इन्हें खुले बन्दों फिरने दिया जाएगा।" येह **मुआ़-हदा** लिख कर का'बए मुशर्रफ़ा के दरवाज़ए मुबा-रका पर लटका दिया गया। कुफ़्फ़ारे कुरैश ने इस पर सख़्ती से अ़मल करते हुए बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल मुत्त़लिब का मुकम्मल त़ौर पर **"समाजी क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़"** (या'नी सोश्यल बायकाट) कर दिया। चुनान्चे येह दोनों[2] ख़ानदान भी

मुसल्मानों के साथ ''शि'बे अबी त़ालिब'' में महसूर (या'नी मुक़य्यद) थे ।

बड़ी सख़्ती से करते थे कुरैश इस घर की निगरानी न आने देते थे ग़ल्ला इधर ता ह़द्दे इम्कानी
कोई ग़ल्ले का सौदागर अगर बाहर से आ जाता तो रस्ते ही में जा कर बू लहब कमबख़्त बहकाता
पहाड़ों का दरा इक क़ल्अए महसूर था गोया ख़ुदा वालों को फ़ाक़ों मारना मन्ज़ूर था गोया
रसूलुल्लाह लेकिन मुत़्मइन थे और साबिर थे
ख़ुदा जिस ह़ाल में रख्खे उसी ह़ालत पे शाकिर थे

चमड़े का टुकड़ा खा लिया

अब सूरते ह़ाल येह थी कि **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में बाहर से जो भी ग़ल्ला (या'नी अनाज) आता कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार उसे ख़ुद ही ख़रीद लेते और मुसल्मानों तक न पहुंचने देते । जब महसूरीन (या'नी शि'बे अबी त़ालिब में मुक़य्यद रहने वालों) के बच्चे भूक से बिल-बिलाते तो कुफ़्फ़ारे ना हन्जार इन की आवाज़ों पर क़ह्क़हे लगाते और ख़ुशी मनाते थे, ख़वातीन का दूध ख़ुश्क हो गया था, महसूरीन कई कई रोज़ तक भूके पड़े रहते, बा'ज़ अवक़ात भूक से बेताब हो कर दरख़्तों के पत्ते उबाल कर खा कर पेट भरते । ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द इब्ने अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि एक बार रात को इन्हें सूखे हुए चमड़े का एक टुकड़ा कहीं से मिल गया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे पानी से धोया, आग पर भूना, कूट कर पानी में घोला और सत्तू की त़रह़ पी कर अपने पेट की आग बुझाई ।

(اَلرَّوْضُ الْاُنُف ج۲ ص ۱۶۱)

www.dawateislami.net

वोह भूकी बच्चियों का रूठ कर फ़िलफ़ौर मन जाना ख़ुदा का नाम सुन कर सब्र की तस्वीर बन जाना
तड़पना भूक से कुछ रोज़ आख़िर जान खो देना वोह माओं का फ़लक को देख कर चुपचाप रो देना
रिज़ा व सब्र से दिन कट गए इन नेक बख़्तों के कि खाने के लिये मिलते रहे पत्ते दरख़्तों के
गुज़ारे तीन साल इस रंग से ईमान वालों ने
दिखा दी शाने इस्तिक़्लाल अपनी आन वालों ने

दीमक का कमाल

जब तीन[3] साल इसी ह़ाल में गुज़र गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर दी कि उस मुआ़-हदे की तह़रीर **दीमक** इस त़रह़ चाट गई है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम के सिवा इस में कुछ बाक़ी नहीं रहा । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह ख़बर अबू त़ालिब को दी, उस ने जा कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कहा : "ऐ गुरौहे क़ुरैश ! मेरे भतीजे ने मुझ को इस त़रह़ की ख़बर दी है तुम अपना लिखा हुवा मुआ़-हदा लाओ, अगर येह ख़बर सह़ीह़ निकली तो तुम क़त़्ए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने) से बाज़ आओ और अगर ग़लत़ निकली तो मैं अपने भतीजे को तुम्हारे ह़वाले कर दूंगा ।" वोह इस पर राज़ी हो गए । जब "मुआ़-हदा" देखा गया तो वैसा ही था जैसा कि ख़बर दी गई थी । कुछ क़ीलो क़ाल (या'नी बह़सो मुबा-ह़से) के बा'द **पांच[5] अश्ख़ास** (हिशाम बिन अ़म्र, ज़ुहैर बिन अबी उमय्या **मख़्ज़ूमी**, मुत़्इ़म बिन अ़दी, **अबुल बख़्तरी** और ज़म्आ़ बिन अस्वद) इस मुआ़-हदे को चाक करने (या'नी फाड़ डालने) पर मुत्तफ़िक़ हो गए और आख़िर कार **अबुल**

बख़्तरी ने ले कर फाड़ डाला । मगर अफ़्सोस ! कुफ़्फ़ारे बद अत्वार बजाए नादिम व शर्म-सार होने के मज़ीद दर पै आज़ार हो गए । (सीरते रसूले अ-रबी, स. 63) **''सुबुलुल हुदा''** में है : इन पांच[5] में से ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस्लाम क़बूल करने की सआ़दत नसीब हुई । **(سُبُلُ الْهُدٰى ج٢ص٤١٤)**

ह़क़ की राह में पथ्थर खाए ख़ूं में नहाए त़ाइफ़ में
दीन का कितनी मेह़नत से काम आप ने ऐ सुल्त़ान किया

(वसाइले बख़्शिश, स. 388)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿5﴾ त़ाइफ़ का लरज़ा ख़ेज़ सफ़र

अब सफ़रे मदीना के दौरान **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से इस्लामी भाइयों की त़रफ़ इरसाल कर्दा एक ''इज्तिमाई मक्तूब'' में से **त़ाइफ़ की रिक़्क़त अंगेज़ दास्तान** ह़स्बे ज़रूरत तरमीम के साथ पेश की जाती है, इसे अश्कबार आंखों से पढ़िये : **ए'लाने नुबुव्वत** के बा'द नव साल तक हमारे मीठे मीठे, प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के अन्दर लोगों में इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाते रहे, मगर बहुत थोड़े अफ़राद ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नेकी की दा'वत क़बूल की । कुफ़्फ़ारे बद अत्वार की त़रफ़ से मुख़ा-लफ़त का ज़ोर रोज़ बरोज़ बढ़ता जा रहा था । **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को कुफ़्फ़ार बेह़द सताते और त़रह़ त़रह़ से

मज़ाक़ उड़ाते थे। हां काफ़िर होने के बा वुजूद बा'ज़ लोग ऐसे भी थे जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से हमदर्दी रखते थे, इन्हीं में से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का चचा अबू ताूलिब भी था, इस का कुफ़्फ़ार पर काफ़ी रो'बो दबदबा था। दसवें साल इस का इन्तिक़ाल हो गया। अब काफ़िरों के हौसले एक दम बुलन्द हो गए और उन की त़रफ़ से ज़ुल्मो सितम की आंधियों ने ख़ूब ज़ोर पकड़ लिया। चुनान्चे रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **त़ाइफ़** का क़स्द (या'नी इरादा) फ़रमाया ताकि वहां जा कर लोगों को इस्लाम की दा'वत इनायत फ़रमाएं, **त़ाइफ़** पहुंच कर बानिये इस्लाम, शहन्शाहे **ख़ैरुल अनाम, मह़बूबे रब्बुस्सलाम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले पहल बनू सक़ीफ़ के तीन[3] सरदारों को इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया।

वोह हादी जो न हो सकता था ग़ैरुल्लाह से ख़ाइफ़
चला इक रोज़ मक्के से निकल कर जानिबे त़ाइफ़
दिया पैग़ामे ह़क़ त़ाइफ़ में, त़ाइफ़ के रईसों को
दिखाई जिन्से रूह़ानी कमीनों को ख़सीसों[1] को

क़लम कांपता है !

अफ़्सोस ! उन नादानों ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नेकी की दा'वत सुन कर बजाए सरे तस्लीम ख़म करने के इन्तिहाई सरकशी का मुज़ा-हरा किया और त़रह़ त़रह़ की बक्वास करने लगे। आह ! इन बद अख़्लाक़ सरदारों ने ऐसे ऐसे गुस्ताख़ाना जुम्ले बके कि इन को क़लम बन्द करने से सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ[2] का **क़लम कांपता** है,

1 : ख़सीस की जम्अ़, ना लाइक़ों। 2 : या'नी इसे मुआ़फ़ी दी जाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को मुआ़फ़ फ़रमाए।

www.dawateislami.net

मेरे प्यारे आक़ा मीठे मीठे **मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अब भी हिम्मत न हारी, दूसरे लोगों की त़रफ़ तशरीफ़ लाए और उन्हें दा'वते इस्लाम पेश की । आह ! सद आह ! **सरवरे काएनात**, शाहे मौजूदात, **महबूबे रब्बुल अर्दि वस्समावात** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ामे नजात को सुनने के लिये कोई तय्यार ही न था, अफ़्सोस ! वोह लोग अपने अ़ज़ीम मोहसिन को दुश्मन समझ बैठे और त़रह़ त़रह़ से दिल आज़ारियों पर उतर आए । उन की बक्वास को सफ़्हए क़िरत़ास (या'नी काग़ज़ के सफ़्हे) पर तह़रीर करने की सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ में ताब कहां ! उन बे रह़मों ने सिर्फ़ ऊल फूल बकने ही पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि औबाश लड़कों को भी पीछे लगा दिया । येह अल्फ़ाज़ तह़रीर करते हुए दिल ग़म में डूबा जा रहा है, आंखें पुरनम हुई जा रही हैं, आह ! वोह ज़ालिम नौ जवान, मेरी आंखों की ठन्डक और दिल के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जान को आ गए तालियां बजाते, त़रह़ त़रह़ से **फब्तियां** कसते पीछा करने लगे, यकायक इन ज़ालिमों ने पथ्थर उठा लिये और देखते ही देखते...... आह ! आह ! सद हज़ार आह ! मेरे आक़ा...... मेरे मीठे मीठे आक़ा...... मेरे दिल के सुल्त़ान आक़ा...... रह़मते आ़-लमियान आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक पर पथराव शुरूअ़ कर दिया, हाए काश ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ उस वक़्त पैदा हो कर ईमान ला चुका होता...... काश ! दीवाना वार...... परवाना वार...... मस्ताना वार...... वोह सारे पथ्थर अपने जिस्म पर झेलता ।

मगर करें क्या नसीब में तो येह ना मुरादी के दिन लिखे थे

न जाने चश्मे फ़लक ने येह ख़ूनी मन्ज़र कैसे देखा होगा ? आह ! जिस्मे नाज़नीन पथ्थरों से ज़ख़्मी हो गया और इस क़दर ख़ून शरीफ़ बहा कि ना'लैने मुबारक ख़ून से भर गईं । जब आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बे क़रार हो कर बैठ जाते तो कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार बाज़ू थाम कर उठा देते । जब फिर चलने लगते तो दोबारा पथ्थर बरसाते और साथ साथ हंसते जाते ।

बढ़े अम्बोह[1] दर अम्बोह पथ्थर ले के दीवाने लगे मींह पथ्थरों का रह़मते आ़लम पे बरसाने
वोह अब्रे लुत्फ़ जिस के साए को गुलशन तरसते थे यहां त़ाइफ़ में उस के जिस्म पर पथ्थर बरसते थे
वोह बाज़ू जो ग़रीबों को सहारा देते रहते थे पया पै आने वाले पथ्थरों की चोट सहते थे
वोह सीना जिस के अन्दर नूरे ह़क़ मस्तूर[2] रहता था वोही अब शक़ हुवा जाता था इस से ख़ून बहता था
जगह देते थे जिन को ह़ामिलाने अ़र्श[3] आंखों पर वोह ना'लैने मुबारक हाए ख़ूं से भर गईं यक्सर

ह़ुज़ूर इस जोर[4] से जब चूर हो कर बैठ जाते थे
शक़ी[5] आते थे बाज़ू थाम कर ऊपर उठाते थे

पहाड़ों का फ़िरिश्ता

ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **म-लकुल जिबाल** (या'नी पहाड़ों पर मुअक्किल फ़िरिश्ते) को ले कर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में ह़ाज़िर हुए । **म-लकुल जिबाल** ने आप की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ कर के दर-ख़्वास्त की : अगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हुक्म फ़रमाएं तो दोनों पहाड़ों को इन कुफ़्फ़ार पर उलट देता हूं । येह सुन कर **नबिय्ये रह़मत**,

1 : या'नी हुजूम 2 : पोशीदा, छुपा हुवा 3 : अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते 4 : ज़ुल्म 5 : बद बख़्त ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

शफ़ीए़ उम्मत, मालिके कौसरो जन्नत, सरापा जूदो सख़ावत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : "मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ज़ाते पाक से पुर उम्मीद हूं कि अगर येह लोग ईमान नहीं लाए तो इन की औलाद में ऐसे लोग पैदा होंगे जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इ़बादत करेंगे।"

(بُخاری ج ۲ ص۳۸۲ حدیث۳۲۳۱) ؎

अगर येह लोग आज इस्लाम पर ईमां नहीं लाते
ख़ुदाए पाक के दामाने वह़दत में नहीं आते
मगर नस्लें ज़रूर इन की इसे पहचान जाएंगी
दरे तौह़ीद पर इक रोज़ आ कर सर झुकाएंगी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

कोई डांट कर तो दिखाए !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें कोई ज़रा सा डांट दे बल्कि इस्लाह़ की बात ही कह दे तो बसा अवक़ात हम आपे से बाहर हो जाते हैं, अगर कोई गाली दे दे या **थप्पड़** वग़ैरा मार दे तब तो मुकम्मल बल्कि कई गुना ज़ियादा इन्तिक़ाम ले लेने के बा वुजूद भी शायद हमारा गुस्सा ठन्डा न हो। मगर क़ुरबान जाइये ! **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर कि इतना इतना सताए जाने के बा वुजूद भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी ज़ात के लिये गुस्सा नहीं आता और न ही अपने दुश्मन की बरबादी व हलाकत की आरज़ू है, अगर कोई आरज़ू है तो फ़क़त़ येही कि इस्लाम का बोलबाला हो, हर जानिब ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ के दीन का उजाला हो और लोग एक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में झुक जाएं।

आसानियों के बा वुजूद सुस्ती

ऐ इ़श्क़े रसूल का दम भरने वाले ! मदीना मदीना करने वाले आ़शिक़ाने रसूल ! क्या इसी का नाम इ़श्क़े रसूल है कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तो कांटों पर चल कर भी तब्लीग़े दीन करें और हम ठन्डी हवा फेंकने वाले पंखों के साए में बल्कि A.C. की ठन्डक में क़ालीनों पर बैठ कर भी **नेकी की दा'वत** न दे पाएं ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ाक़ों के सबब अपने मुबारक पेट पर पथ्थर बांध कर भी इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाएं और हम डट कर और वोह भी उ़म्दा से उ़म्दा ने'मतें खाने के बा वुजूद भी दीन के लिये कुछ न कर पाएं ! क्या **मह़ब्बते** रसूल इसी का नाम है कि मह़बूबे रब्बे अक्बर, मक्के मदीने के ताजवर, सब्रो रिज़ा के पैकर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ब-दने अत़्हर पर पथ्थर खा कर भी इस्लाम की तब्लीग़ का फ़रीज़ा बजा लाएं और हम पर लोग फूल निछावर करें फिर भी हम इस अ़ज़ीम म-दनी काम से जी चुराएं ।

www.dawateislami.net

हाए ! मुसल्मानों का बिगड़ा हुवा किरदार !

ऐ प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दीवानगी में झूमने वाले आ़शिक़ाने रसूल ! मुसल्मानों की ख़स्ता ह़ाली आप के सामने है, क्या बे अ़-मली के सैलाब और मस्जिदों की वीरानी देख कर आप का दिल नहीं जलता ? आह ! मग़रिबी फ़ेशन की यलग़ार, फ़िरंगी तहज़ीब की त़ूमार, बे ह़याइयों से भरपूर प्रोग्राम देखने के लिये घर घर रखे हुए टीवी और वीसीआर, क़दम क़दम पर गुनाहों की भरमार, हाए ! मुसल्मानों

का बिगड़ा हुवा किरदार ! येह सब बातें मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही और आख़िरत की बेहतरी के त़लब गार मुसल्मान के लिये बेह़द कर्बो इज़्त़िराब का बाइस हैं और वोह इस्लाह़े मुस्लिमीन के लिये बे क़रार हो जाता है, ऐ काश ! हमें बे अ़मल मुसल्मानों के सुधार की कोशिश का अ़ज़ीम जज़्बा नसीब हो जाए ! काश ! हम अपने अ़ज़ीम म-दनी मक़्सद में काम्याब हो जाएं। आइये ! लगे हाथों अपना म-दनी मक़्सद मिल कर दोहराए लेते हैं : **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

दो दर्द सुन्नतों का पए शाहे करबला
उम्मत के दिल से लज़्ज़ते फ़ेशन निकाल दो

www.dawateislami.net

(वसाइले बख़्शिश, स. 290)

नेकी की दा'वत की फ़ज़ीलत व अ-ज़मत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें ख़ूब ख़ूब **नेकी की दा'वत** की धूमें मचानी चाहिएं, **नेकी की दा'वत** की दुन्यवी व उख़्रवी ब-र-कतों के क्या कहने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि जिस ने **भलाई** का हुक्म दिया और **बुराई** से मन्अ़ किया और लोगों को मेरी इत़ाअ़त (या'नी फ़रमां बरदारी) की त़रफ़ बुलाया, क़ियामत के दिन मेरे **अ़र्श के साए** में होगा। (حِلْيَةُ الْاَولياء ج٦ ص٣٦ رقم ٧٧١٦)

बा वुजूदे क़ुदरत गुनाह से न रोकने वाले के लिये वईद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! जो क़ौम क़ुदरत के बा वुजूद गुनाह करने वाले को इस से रोकती नहीं, अन्देशा है कि वोह न

रोकने वाली क़ौम मरने से पहले दुन्या ही में अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाए। चुनान्चे फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है **:** अगर किसी क़ौम में कोई शख़्स गुनाह का मुर-तकिब हो और क़ौम के लोग **बा वुजूदे क़ुदरत** उसे गुनाह से न रोकें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के मरने से पहले उन पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा। **(ابوداؤد ج ٤ ص ١٦٤ حدیث ٤٣٣٩)**

40 हज़ार अच्छे भी हलाक करूंगा क्यूं कि......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बे नमाज़ियों, गालियां बकने वालों, फ़िल्मों, डिरामों, गानों बाजों, ग़ीबतों और चुग़लियों वग़ैरा गुनाहों से बाज़ न आने वालों से दोस्तियां गांठना, इन की हौसला अफ़्ज़ाई का बाइस बनना, इन के साथ उठना बैठना, खाना पीना वग़ैरा दुन्या व आख़िरत के लिये सख़्त तबाह कुन है। फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार की सोह़बत इख़्तियार करने वालों की मज़म्मत करते हुए **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 **सफ़ह़ा** 211 ता 212 पर नक़्ल करते हैं **: अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है **:**

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾ **(پ۷، الانعام ٦٨)**

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

(बयान कर्दा आयते मुबा-रका में ''ज़ालिमीन'' से मुराद कौन लोग हैं, इस की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं) **तफ़्सीरे अह़मदी** में है **:** ज़ालिम

लोग बद मज़्हब और फ़ासिक़ और काफ़िर हैं, इन सब के पास बैठना मन्अ़ है। (التفسیرات الاحمدیہ ص ۳۸۸) मरवी हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने (ह़ज़रते सय्यिदुना) यूशअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वह़्य भेजी : मैं तेरी बस्ती से **चालीस हज़ार अच्छे और साठ हज़ार बुरे लोग हलाक करूंगा ।** अ़र्ज़ की : इलाही ! बुरे तो बुरे हैं अच्छे क्यूं हलाक होंगे ? फ़रमाया : इस लिये कि जिन पर मेरा ग़ज़ब था उन्हों ने उन पर ग़ज़ब न किया और उन के साथ खाने पीने में शरीक रहे । (الامر بالمعروف والنهی عن المنکر مع موسوعة ابن آبی الدُّنیا ج ۲ ص ۲۱۳ رقم ۷۱)

नेकी की दा'वत के लिये सफ़र करना सुन्नत है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बस गुनाहों के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग कर दीजिये, ख़ुद को गुनाहों से बचाने के साथ दूसरों को बचाने पर कमर बांध लीजिये, नेकी की दा'वत देना, इस के लिये घर से निकलना, इस की ख़ातिर सफ़र इख़्तियार करना, इस राह में आने वाली तकालीफ़ को बरदाश्त करना यक़ीनन हमारे मीठी मीठे आक़ा मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **प्यारी प्यारी सुन्नतें** हैं । ऐ काश ! हम पर भी करम हो जाए और हम भी इन अ़ज़ीम सुन्नतों पर अ़मल करने वाले बन जाएं और **नेकी की दा'वत** की ख़ातिर घर से निकलना, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना और इस की तमाम तर सख़्तियों पर सब्र करना सीख लें । **ऐ आ़शिक़ाने रसूल कहलाने वालो !** दुन्या के काम धन्दों के लिये तो

www.dawateislami.net

बरसों घर से दूर रहने के लिये तय्यार हो जाते हो, क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन की सर बुलन्दी के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की चन्द रोज़ के लिये भी क़ुरबानी नहीं दोगे ?

सुन्नत है सफ़र दीन की तब्लीग़ की ख़ातिर
मिलता है हमें दर्स येह अस्फ़ार[1] नबी से

(वसाइले बख़्शिश, स. 203) (1 : सफ़र की जम्अ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इल्म के फ़ज़ाइल में चार फ़रामीने मुस्तफ़ा

इस्लाम का दर्द दिल में रखने वाले हर मुसल्मान से मेरी ग़मगीन इल्तिजा है कि तब्लीगे क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के दुन्या में जहां कहीं "म-दनी क़ाफ़िले" नज़र आएं इन के साथ कुछ न कुछ वक़्त ज़रूर गुज़ारिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ दे तो इन के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कर के अज्रो सवाब के ह़क़दार बनिये। **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र इल्मे दीन ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है और **इल्मे दीन के फ़ज़ाइल** के भी क्या कहने ! "**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**" **सफ़ह़ा** 38 ता 40 से **चार फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों : ﴾1﴿ जो शख़्स इल्म की त़लब में घर से निकलता है फ़िरिश्ते उस के इस अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं। (طَبَرانی کبیر ج ۸ ص ۵٤ حدیث ۷۳٤۷) ﴾2﴿ जो कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

के फ़राइज़ से **मु-तअ़ल्लिक़** एक या दो या तीन या चार या पांच कलिमात सीखे और उसे अच्छी त़रह़ याद कर ले और फिर लोगों को सिखाए तो वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा । (اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب ج۱ ص ۵٤ حدیث ۲۰) ﴾3﴿ जो सुब्ह़ को मस्जिद की त़रफ़ भलाई सीखने या सिखाने के इरादे से चलेगा उसे **कामिल ह़ज** करने वाले का सवाब मिलेगा । (طَبَرانی کبیر ج ۸ ص ۹٤ حدیث ۷٤۷۳) ﴾4﴿ जो बन्दा इल्म की **जुस्त-जू** में जूते, मोज़े या कपड़े पहनता है तो अपने घर की चौखट (या'नी दरवाज़े) से निकलते ही उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं ।

(طَبَرانی اَوسط ج ٤ ص ۲۰٤ حدیث ۵۷۲۲)

अमीरे क़ाफ़िला के ह़ुस्ने अख़्लाक़ ने मुझे म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले इल्म का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के **म-दनी क़ाफ़िले** भी हैं, उ़म्र भर में यक मुश्त 12 माह, हर बारह माह में 30 दिन और हर तीस दिन में 3 दिन **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में **सुन्नतों** भरा सफ़र कीजिये । म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कतों को समझने के लिये एक **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि मेरी उ़म्रे अ़ज़ीज़ के 25 बरस गुज़र चुके थे मगर मैं इल्मे दीन से इस क़दर कोरा था कि मुझे नमाज़ व रोज़े के बुन्यादी अह़काम तक मा'लूम न थे । एक दिन मस्जिद में नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हुवा तो एक इस्लामी भाई ने बड़े तपाक से आगे बढ़ कर मुझ से मुलाक़ात की, इसी दौरान **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत

भी दी। **दा'वते इस्लामी** के "म-दनी माहोल" से ना आशनाई के बाइस मैं ने इन्कार कर दिया मगर हमारे महल्ले की मस्जिद के इमाम साहिब ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाई और मेरी ख़ूब हिम्मत बंधाई यहां तक कि उन्हों ने मुझे **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आमादा कर लिया। मैं सफ़र की निय्यत से हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हाज़िर हो गया, इज्तिमाअ़ के बा'द सुब्ह़ म-दनी क़ाफ़िले ने सफ़र करना था, मैं दुन्या की **महब्बत** का मारा इतनी देर मस्जिद में रहने से उक्ता सा गया था और "म-दनी क़ाफ़िले" में मज़ीद 3 दिन मस्जिद में रहने के तसव्वुर से घबरा रहा था, मैं ने यहां से फ़िरार हो जाने की निय्यत भी कर ली थी कि इतने में मेरे **अमीरे क़ाफ़िला** ढूंडते हुए मुझ तक आ पहुंचे, शैत़ान ने मुझे उक्साया कि "मियां अब तो फंसे ! येह मौलवी तुम्हें नहीं छोड़ेगा," मैं ने भी दिल में कहा : देखता हूं मुझे येह कैसे क़ाफ़िले में ले जाता है ! लिहाज़ा शैत़ान के बहकावे में आ कर मैं ने अपने मोह़सिन अमीरे क़ाफ़िला को ग़ुस्से में झाड़ दिया कि "मियां जाओ ! मैं आप को नहीं जानता मुझे किसी म-दनी क़ाफ़िले में नहीं जाना, बस मुझे तंग न करो घर जाने दो।" यक़ीन मानिये ! मेरी ह़ैरत की उस वक़्त इन्तिहा न रही जब अपनी जली कटी सुनाने के बा'द **अमीरे क़ाफ़िला** के लबों पर मुस्कुराहट खेलती देखी ! उन्हों ने मुझ पर ग़ुस्से के ज़रीए़ जवाबी कारवाई करने के बजाए मुस्कुरा मुस्कुरा कर निहायत शफ़्क़त और नरमी से **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये मुझे समझाना शुरूअ़ कर दिया और इस के लिये मेरी मिन्नत व समाजत करने लगे, उन के आ'ला अख़्लाक़ ने मुझे **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर राज़ी कर ही लिया और मैं

आशिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गया, पहले ही दिन जब म-दनी क़ाफ़िले वालों ने सीखने सिखाने के **म-दनी हल्क़े** लगाए तो मुझे दिल ही दिल में बेहद नदामत होने लगी कि सद करोड़ अफ़्सोस ! 25 साल की उम्र हो गई मगर अभी तक दीन के बुन्यादी अह़काम भी मुझे नहीं मा'लूम ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **आशिक़ाने रसूल** की सोह़बत में 3 दिन गुज़ारने के बा'द मैं बहुत सा इल्मे दीन म-सलन वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ के कई अह़काम सीख कर और **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने का अ़ज़ीम जज़्बा ले कर इस ह़ाल में घर पलटा कि मेरे सर पर म-दनी क़ाफ़िले की याद दिलाता **सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़** का ताज जगमगा रहा था।

www.dawateislami.net

अच्छी सोह़बत मिले, ख़ूब ब-र-कत मिले
चल पड़ो चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो
लूट लें रह़मतें, ख़ूब लें ब-र-कतें
ख़्वाब अच्छे दिखें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्तिक़ामत बहुत ज़रूरी है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुनर कोई सा भी हो जब तक उसे इस्तिक़ामत से न सीखा जाए महारत ह़ासिल होना दुश्वार है, येही मुआ़-मला इल्मे दीन का है, नफ़्स लाख सुस्ती दिलाए, शैत़ान ग़फ़्लत की नींद सुलाने के लिये ख़्वाह कितनी ही लोरियां सुनाए आप होशियार व बेदार रहिये, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करते कराते रहिये और इल्मे दीन

सीखते सिखाते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ काम्याबी ज़रूर आप के क़दम चूमेगी । **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی اَدْوَمُھَا وَاِنْ قَلَّ या'नी **अल्लाह तआ़ला** के यहां सब से **पसन्दीदा अ़मल** वोह है जो हमेशा किया जाए अगर्चे क़लील हो ।

(مُسلِم ص٣٩٤ حدیث٢١٨)

म-दनी इन्आ़मात किस के लिये कितने ?

इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम **''म-दनी इन्आ़मात''** ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया गया है । इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83**, म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40** जब कि ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 म-दनी इन्आ़मात** हैं । बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़-लबा **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल **''फ़िक्रे मदीना करते हुए''** या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर **म-दनी इन्आ़मात** के ''जेबी साइज़ रिसाले'' में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं । इन **म-दनी इन्आ़मात** को इख़्लास के साथ अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से अक्सर दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत

करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी बनता है। सभी को चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला ह़ासिल करें और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए इस में दिये गए ख़ाने पुर करें और हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बनाएं।

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल
''म-दनी इन्आ़मात'' पर करता है जो कोई अ़मल

(वसाइले बख़्शिश, स. 608)

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा

म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़समिया) बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 सि.हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, और मीठे बोल के अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"या रब ! ज़ेरे सब्ज़ गुम्बद बिठा" के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से बैठने के 18 म-दनी फूल

❁ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग देर तक किसी जगह बैठे और बिग़ैर **ज़िक्रुल्लाह** और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़े वहां से मु-तफ़र्रिक़ हो गए। उन्हों ने नुक़्सान किया अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे अ़ज़ाब दे और चाहे तो बख़्श दे (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج۲ ص۱۶۸ حديث ۱۸۶۹) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते कि मैं ने **सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को का'बे शरीफ़ के सेह़न में **इह़्तिबा** की सूरत में तशरीफ़ फ़रमा देखा। (بُخاری ج ٤ ص ١٨٠ حديث ٦٢٧٢) **इह़्तिबा** का मत़लब येह है कि आदमी सुरीन के बल बैठे और अपनी दोनों[2] पिंडलियों को दोनों[2] हाथों के ह़ल्क़े में ले ले।

इस क़िस्म का बैठना तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी व इन्किसारी) में शुमार होता है (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 432) ۞ इस दौरान बल्कि जब भी बैठें पर्दे की जगहों की हैअत व कैफ़िय्यत नज़र नहीं आनी चाहिये, लिहाज़ा ''पर्दे में पर्दा'' के लिये घुटनों से क़दमों तक चादर डाल ली जाए अगर कुरता सुन्नत के मुताबिक़ हो तो उस के दामन से भी ''पर्दे में पर्दा'' किया जा सकता है ۞ **हुज़ूरे** पुरनूर, **शाफ़ेए यौमुन्नुशूर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब नमाज़े फ़ज्र पढ़ लेते चार[4] ज़ानू (या'नी चोकड़ी मार कर) बैठे रहते, यहां तक कि सूरज अच्छी त़रह़ तुलूअ़ हो जाता (ابوداؤد ج٤ص٣٤٥حدیث٤٨٥٠) ۞ **जामेए करामाते औलिया** जिल्द अव्वल के **सफ़ह़ा** 67 पर है : **इमाम यूसुफ़ नबहानी** قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی की दो[2] ज़ानू (या'नी जिस त़रह़ नमाज़ में **अत्तहिय्यात** में बैठते हैं इस त़रह़) बैठने की आ़दते करीमा थी ۞ नमाज़ के बाहर (या'नी इलावा) भी दो[2] ज़ानू बैठना अफ़्ज़ल है (मिरआत, जि. 8, स. 90) ۞ **सरवरे काएनात**, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मूमन **क़िब्ला रू** हो कर बैठते थे (احیاء العلوم ج٢ص٤٤٩) ۞ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : ''मजालिस में सब से मुकर्रम (या'नी इ़ज़्ज़त वाली) मजलिस (या'नी बैठना) वोह है जिस में **क़िब्ले की त़रफ़ मुंह** किया जाए'' (طبرانی اوسط ج ٦ ص ١٦١ حدیث ٨٣٦١) ۞ **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُمَا अक्सर क़िब्ले को मुंह कर के बैठते थे (اَلمقاصدُ الحَسَنة ص٨٨) ۞ मुबल्लिग़ और मुदर्रिस के लिये दौराने बयान व तदरीस सुन्नत येह है कि पीठ क़िब्ले की त़रफ़ रखें ताकि इन से इ़ल्म की बातें सुनने वालों का रुख़ जानिबे **क़िब्ला** हो सके चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ सख़ावी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **क़िब्ले** को इस लिये पीठ फ़रमाया करते थे कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जिन्हें इल्म सिखा रहे हैं या वा'ज़ फ़रमा रहे हैं **उन का रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ रहे** (اَلْمَقَاصِدُ الْحَسَنة ص ٨٨) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है **बेचैन** दिलों के चैन, रह़मते दारैन, सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को कभी न देखा गया कि अपने हम नशीन के सामने घुटने फैला कर बैठे हों (تِرمِذی ج٤ ص٢٢١ حدیث٢٤٩٨) ह़दीसे पाक में **''रुक्बतैन''** (या'नी घुटने) का लफ़्ज़ है इस से मुराद एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ''दोनों[2] पाउं'' हैं जैसा कि **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कभी किसी मजलिस (या'नी बैठक) में किसी की त़रफ़ पाउं फैला कर नहीं बैठते थे, न औलाद की त़रफ़ न अज़्वाजे पाक की त़रफ़ न ग़ुलामों ख़ादिमों की त़रफ़ (मिरआत, जि. 8, स. 80) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने कभी अपने उस्तादे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد के मकाने आ़लीशान की त़रफ़ पाउं नहीं फैलाए उन के एह़तिराम और इक्राम की वजह से, आप (या'नी उस्ताज़े गिरामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی) के घर मुबारक और मेरी रिहाइश गाह में चन्द गलियों का फ़ासिला होने के बा वुजूद मैं ने कभी उधर पाउं नहीं फैलाए (مناقب الامام الاعظم ابی حنیفة للموفق حصّه٢ ص٧) ❁ **आने वाले के लिये सरक्ना** (खिसक्ना) **सुन्नत है :** बहारे शरीअ़त जिल्द 3 **सफ़ह़ा** 432 पर ह़दीस नम्बर 6 है : एक शख़्स **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) मस्जिद में

तशरीफ़ फ़रमा थे । उस के लिये हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) अपनी जगह से सरक गए उस ने अ़र्ज़ किया, **या रसूलल्लाह !** (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) जगह कुशादा मौजूद है, (हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को सरक्ने और तक्लीफ़ फ़रमाने की ज़रूरत नहीं) इर्शाद फ़रमाया : मुस्लिम का येह ह़क़ है कि जब उस का भाई उसे देखे, उस के लिये सरक जाए (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ص٤٦٨ حدیث٨٩٣٣) ❁ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : ''जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप कुछ छाउं में रह जाए तो उसे चाहिये कि वहां से उठ जाए'' (ابوداؤد ج ٤ ص ٣٣٨ حدیث ٤٨٢١) ❁ मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की निशस्त (या'नी बैठने की जगह) पर उन की ग़ैबत (या'नी ग़ैर मौजू-दगी) में भी न बैठे (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 369, 424) ❁ जब कभी इज्तिमाअ़ या मजलिस में आएं तो लोगों को फलांग कर आगे न जाएं जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं ❁ जब बैठें तो जूते उतार लें, आप के क़दम आराम पाएंगे (اَلْجَامِعُ الصَّغِیر ص٤٠ حدیث٥٥٤) ❁ मजलिस (या'नी बैठक) से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ तीन[3] बार पढ़ लें तो ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और जो इस्लामी भाई मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस ख़ैर (या'नी अच्छाई) पर मोहर लगा दी जाएगी । वोह दुआ येह है :

''سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ''[1]

(ابوداؤد ج٤ص٣٤٧ حدیث ٤٨٥٧)

مدینہ

1 : तरजमा : तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हो शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

100 एक चुप सो सुख

www.dawateislami.net

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

18 र-जबुल मुरज्जब 1433 सि.हि.
9-6-2012

येह रिसाला पढ़कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़	उ़न्वान	सफ़ह़
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	कोई डांट कर तो दिखाए !	14
भयानक ऊंट	1	आसानियों के बा वुजूद सुस्ती	15
वाह रे ! शाने बे नियाज़ी	2	हाए ! मुसल्मानों का बिगड़ा हुवा किरदार !	15
आक़ाए मज़्लूम को सताने का सबब	3	नेकी की दा'वत की फ़ज़ीलत व अ़-ज़मत	16
कोहे सफ़ा स नेकी की दा'वत	3	बा वुजूदे क़ुदरत गुनाह से न रोकने वाले के लिये वईद	16
दरवाज़े पर ख़ून	4	40 हज़ार अच्छे भी हलाक करूंगा क्यूं कि	17
राहे ख़ुदा में मुसीबत झेलना सुन्नत है	5	नेकी की दा'वत के लिये सफ़र करना सुन्नत है	18
शि'बे अबी त़ालिब	6	इ़ल्म के फ़ज़ाइल में चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा	19
समाजी क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ (या'नी सोश्यल बायकाट)	7	अमीरे क़ाफ़िला के हुस्ने अख़्लाक़ ने मुझे म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना दिया	20
चमड़े का टुकड़ा खा लिया	8	इस्तिक़ामत बहुत ज़रूरी है	22
दीमक का कमाल	9	म-दनी इन्आ़मात किस के लिये कितने ?	23
त़ाइफ़ का लरज़ा ख़ेज़ सफ़र	10	आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा	24
क़लम कांपता है !	11	बैठने के 18 म-दनी फूल	25
पहाड़ों का फ़िरिश्ता	13	☆☆☆☆☆	

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है । (مسلم)

ماٰخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
کنزالایمان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	سبل الھدیٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
التفسیرات الاحمدیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	مناقب الامام الاعظم ابی حنیفۃ	کوئٹہ
صحیح بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	سیرتِ رسولِ عربی	ضیاءالقران پبلی کیشنز مرکزالاولیاء لاہور
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	جامع کراماتِ اولیاء	مرکز اہلسنت برکات رضا
سنن ترمذی	دارالفکر بیروت	القول البدیع	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سنن ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	المواھب اللدنیۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مستدرک	دارالمعرفۃ بیروت	بستان الواعظین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	السیرۃ النبویہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	الخصائص الکبریٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الروض الانف	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الامر بالمعروف والنہی عن المنکر	المکتبۃ العصریۃ بیروت	احیاء العلوم	دارصادر بیروت
الترغیب والترھیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	مراٰۃ المناجیح	ضیاءالقران پبلی کیشنز مرکزالاولیاء لاہور
الجامع الصغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
تاریخ دمشق	دارالفکر بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
المقاصد الحسنۃ	دارالکتاب العربی بیروت	☆☆☆	☆☆☆

www.dawateislami.net